Anusandhanvallari
Vol 2025, No.1
February 2025
ISSN 2229-3388

छत्तीसगढ़ के आदिवासी और गैर-आदिवासी किशोरों की शैक्षिक आकांक्षाओं पर जीवन कौशल के प्रभाव पर एक अध्ययन : पहाड़ी कोरवा के संदर्भ में

[1]महेश राम चौहान, [2]डॉ. आदित्य प्रकाश सक्सेना

[1]शोधार्थी, शिक्षा विभाग, कलिंगा विश्वविद्यालय, रायपुर

[2]पर्यवेक्षक, शिक्षा विभाग, कलिंगा विश्वविद्यालय, रायपुर

सारांश: प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य छत्तीसगढ़ के आदिवासी अर्थात् पहाड़ी कोरवा एवं गैर-आदिवासी किशोरों की शैक्षिक आकांक्षाओं पर जीवन कौशल के प्रभाव का अध्ययन करना था। अध्ययन में यह जानने का प्रयास किया गया कि आदिवासी एवं गैर-आदिवासी किशोरों की शैक्षिक आकांक्षाओं में कोई सार्थक अंतर है अथवा नहीं तथा जीवन कौशल का शैक्षिक आकांक्षा से किस प्रकार का संबंध एवं प्रभाव है। प्रस्तुत अध्ययन वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि पर आधारित था। अध्ययन के लिए छत्तीसगढ़ राज्य के बलरामपुर जिले के चयनित उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में कक्षा 11वीं में अध्ययनरत कुल 600 किशोरों का चयन किया गया, जिनमें 300 पहाड़ी कोरवा आदिवासी किशोर तथा 300 गैर-आदिवासी किशोर सम्मिलित थे। आँकड़ों के संकलन हेतु जीवन कौशल मापनी एवं शैक्षिक आकांक्षा मापनी का प्रयोग किया गया। आँकड़ों के विश्लेषण हेतु मध्यमान, मानक विचलन, स्वतंत्र नमूना t-परीक्षण, पियर्सन सहसंबंध गुणांक एवं सरल रैखिक प्रतिगमन विश्लेषण का प्रयोग किया गया। परिणामों से ज्ञात हुआ कि गैर-आदिवासी किशोरों की शैक्षिक आकांक्षा आदिवासी किशोरों की तुलना में सार्थक रूप से अधिक पाई गई। जीवन कौशल एवं शैक्षिक आकांक्षा के मध्य धनात्मक एवं सार्थक सहसंबंध पाया गया। प्रतिगमन विश्लेषण से स्पष्ट हुआ कि जीवन कौशल किशोरों की शैक्षिक आकांक्षा में लगभग 27.0% प्रसरण की व्याख्या करता है। अध्ययन इस निष्कर्ष पर पहुँचता है कि जीवन कौशल किशोरों की शैक्षिक आकांक्षाओं को सुदृढ़ करने वाला एक महत्वपूर्ण मनो-सामाजिक कारक है।

मुख्य शब्द: जीवन कौशल, शैक्षिक आकांक्षा, आदिवासी किशोर, गैर-आदिवासी किशोर, पहाड़ी कोरवा, छत्तीसगढ़।

1. प्रस्तावना

किशोरावस्था जीवन की वह महत्वपूर्ण अवस्था है जिसमें व्यक्ति अपने शैक्षिक, सामाजिक एवं व्यावसायिक भविष्य के प्रति स्पष्ट दृष्टिकोण विकसित करना आरंभ करता है। इस अवस्था में विद्यार्थी अपने अनुभवों, पारिवारिक पृष्ठभूमि, विद्यालयी वातावरण, सामाजिक अवसरों तथा व्यक्तिगत क्षमताओं के आधार पर भविष्य की दिशा निर्धारित करता है। शैक्षिक आकांक्षा किशोर के उस भावी शैक्षिक लक्ष्य को व्यक्त करती है, जिसके माध्यम से वह उच्च शिक्षा, सामाजिक प्रतिष्ठा, आत्मनिर्भरता और जीवन-उन्नति प्राप्त करना चाहता है।

शैक्षिक आकांक्षा केवल विद्यार्थी की इच्छा या स्वप्न मात्र नहीं होती, बल्कि यह उसकी प्रेरणा, आत्मविश्वास, लक्ष्य-निर्धारण, परिश्रमशीलता और शैक्षिक निरंतरता से गहराई से जुड़ी होती है। जिन विद्यार्थियों की शैक्षिक आकांक्षा उच्च होती है, वे प्रायः शिक्षा को अपने भविष्य-निर्माण का प्रभावी साधन मानते हैं और उच्चतर अध्ययन की दिशा में अधिक सक्रिय रहते हैं। इसके विपरीत निम्न शैक्षिक आकांक्षा विद्यार्थी की शैक्षिक प्रगति, आत्मविश्वास और भावी अवसरों को सीमित कर सकती है।

विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार जीवन कौशल वे क्षमताएँ हैं जो व्यक्ति को दैनिक जीवन की चुनौतियों का सकारात्मक एवं प्रभावी ढंग से सामना करने में समर्थ बनाती हैं। इनमें आत्म-जागरूकता, सहानुभूति, निर्णयन, समस्या-समाधान, सर्जनात्मक चिंतन, समीक्षात्मक चिंतन, प्रभावी सम्प्रेषण,

अंतर्वैयक्तिक संबंध, तनाव-प्रबंधन और संवेग-प्रबंधन जैसे कौशल सम्मिलित हैं। ये कौशल किशोरों को अपनी क्षमताओं को पहचानने, लक्ष्य निर्धारित करने, चुनौतियों का सामना करने और शिक्षा के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करने में सहायता करते हैं।

छत्तीसगढ़ के पहाड़ी कोरवा समुदाय को विशेष रूप से कमजोर जनजातीय समूह माना जाता है। यह समुदाय मुख्यतः पहाड़ी, वनांचल एवं दुर्गम क्षेत्रों में निवास करता है। सीमित शैक्षिक सुविधाएँ, आर्थिक पिछड़ापन, पारिवारिक शैक्षिक पृष्ठभूमि की कमी, भौगोलिक दूरी और उच्च शिक्षा से संबंधित जानकारी का अभाव इस समुदाय के किशोरों की शैक्षिक आकांक्षाओं को प्रभावित कर सकता है। ऐसी स्थिति में यह अध्ययन करना आवश्यक हो जाता है कि जीवन कौशल इन किशोरों की शैक्षिक आकांक्षा को किस सीमा तक प्रभावित करते हैं तथा आदिवासी और गैर-आदिवासी किशोरों के मध्य इस संदर्भ में क्या अंतर पाया जाता है।

2. साहित्य समीक्षा

जीवन कौशल और शैक्षिक आकांक्षा के संबंध में अनेक अध्ययनों से यह स्पष्ट हुआ है कि विद्यार्थी की आंतरिक मनो-सामाजिक क्षमताएँ उसके शैक्षिक लक्ष्यों को प्रभावित करती हैं। जीवन कौशल विद्यार्थी को आत्मविश्वासी, निर्णयक्षम, लक्ष्य-उन्मुख और समस्या-समाधान में सक्षम बनाते हैं, जिससे उसकी शैक्षिक आकांक्षा सुदृढ़ होती है। शर्मा एवं कुमारी (2024)

डर्लक एवं सहयोगियों (2011) ने विद्यालय-आधारित सामाजिक एवं संवेगात्मक अधिगम कार्यक्रमों पर किए गए मेटा-विश्लेषण में पाया कि सामाजिक-संवेगात्मक कौशलों का विकास विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि, व्यवहार और सकारात्मक दृष्टिकोण को प्रभावित करता है। इससे यह संकेत मिलता है कि जीवन कौशल शिक्षा विद्यार्थियों के शैक्षिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है।

एक्ल्स एवं विगफील्ड (2002) ने प्रत्याशा-मूल्य सिद्धांत के आधार पर स्पष्ट किया कि विद्यार्थी की शैक्षिक आकांक्षा इस बात से प्रभावित होती है कि वह किसी लक्ष्य को कितना मूल्यवान मानता है और उसे प्राप्त कर पाने की कितनी संभावना देखता है। जीवन कौशल जैसे आत्म-जागरूकता, आत्मविश्वास और निर्णय-क्षमता विद्यार्थी की इसी प्रत्याशा को मजबूत करते हैं।

कुमार एवं फोगाट (2018) ने माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की शैक्षिक आकांक्षा का अध्ययन सामाजिक-आर्थिक स्थिति के संदर्भ में किया और पाया कि सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि विद्यार्थियों की शैक्षिक आकांक्षा को प्रभावित करती है। जनजातीय एवं वंचित समुदायों के संदर्भ में यह निष्कर्ष विशेष रूप से महत्वपूर्ण है।

भट्ट एवं सहयोगियों (2018) ने विद्यालयी वातावरण एवं अभिभावकीय प्रोत्साहन को शैक्षिक आकांक्षा का महत्वपूर्ण निर्धारक बताया। यह निष्कर्ष इस बात को रेखांकित करता है कि शैक्षिक आकांक्षा केवल विद्यार्थी की व्यक्तिगत इच्छा नहीं, बल्कि पारिवारिक, विद्यालयी और सामाजिक वातावरण से भी प्रभावित होती है।

मिश्रा एवं सहयोगियों (2024) ने आदिवासी विद्यार्थियों की शैक्षिक आकांक्षा और शैक्षणिक उपलब्धि के मध्य संबंध का अध्ययन किया और पाया कि उच्च शैक्षिक आकांक्षा विद्यार्थियों की शैक्षिक प्रगति के लिए महत्वपूर्ण है। तथापि पहाड़ी कोरवा जैसे विशेष रूप से कमजोर जनजातीय समूहों पर जीवन कौशल और शैक्षिक आकांक्षा के संदर्भ में अध्ययन सीमित हैं। यही तथ्य प्रस्तुत अध्ययन की प्रासंगिकता को स्पष्ट करता है।

3. अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्त्व

पहाड़ी कोरवा समुदाय शैक्षिक, सामाजिक एवं आर्थिक दृष्टि से वंचित समुदायों में सम्मिलित है। इस समुदाय के अनेक किशोर प्रथम-पीढ़ी शिक्षार्थी होते हैं। उनके परिवारों में उच्च शिक्षा का अनुभव सीमित होता है, जिसके कारण विद्यार्थियों को उच्च शिक्षा, छात्रवृत्ति, प्रवेश प्रक्रिया और भविष्यगत शैक्षिक अवसरों के विषय में पर्याप्त जानकारी नहीं मिल पाती। यदि जीवन कौशल शैक्षिक आकांक्षा को सकारात्मक रूप से प्रभावित करते हैं, तो विद्यालयों में जीवन-कौशल आधारित कार्यक्रमों के माध्यम से जनजातीय किशोरों की शैक्षिक आकांक्षाओं को सुदृढ़ किया जा सकता है। यह

अध्ययन इस दृष्टि से महत्वपूर्ण है कि यह जीवन कौशल को केवल व्यवहारिक दक्षता के रूप में नहीं, बल्कि शैक्षिक लक्ष्य-निर्धारण और भविष्य-दृष्टि से जोड़कर देखता है।

प्रस्तुत अध्ययन जनजातीय शिक्षा, जीवन कौशल शिक्षा, शैक्षिक परामर्श और शैक्षिक समानता की दृष्टि से उपयोगी है। इसके निष्कर्ष विशेष रूप से पहाड़ी कोरवा आदिवासी किशोरों की शैक्षिक आकांक्षा को बढ़ाने के लिए विद्यालयों, शिक्षकों, परामर्शदाताओं और नीति-निर्माताओं को उपयोगी दिशा प्रदान कर सकते हैं।

4. अध्ययन के उद्देश्य

उद्देश्य 1: आदिवासी एवं गैर-आदिवासी किशोरों की शैक्षिक आकांक्षाओं के मध्य अंतर का अध्ययन करना।

उद्देश्य 2: आदिवासी एवं गैर-आदिवासी किशोरों के जीवन कौशल एवं शैक्षिक आकांक्षा के मध्य संबंध का अध्ययन करना।

उद्देश्य 3: किशोरों की शैक्षिक आकांक्षा पर जीवन कौशल के प्रभाव का अध्ययन करना।

5. परिकल्पनाएँ

$H_0$1: आदिवासी एवं गैर-आदिवासी किशोरों की शैक्षिक आकांक्षाओं के मध्य कोई सार्थक अंतर नहीं पाया जाएगा।

$H_0$2: आदिवासी एवं गैर-आदिवासी किशोरों के जीवन कौशल एवं शैक्षिक आकांक्षा के मध्य कोई सार्थक संबंध नहीं पाया जाएगा।

$H_0$3: किशोरों की शैक्षिक आकांक्षा पर जीवन कौशल का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पाया जाएगा।

6. शोध प्रविधि

6.1 शोध अभिकल्प

प्रस्तुत अध्ययन में वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया। यह विधि इसलिए उपयुक्त रही, क्योंकि अध्ययन का उद्देश्य आदिवासी एवं गैर-आदिवासी किशोरों की शैक्षिक आकांक्षाओं की तुलनात्मक स्थिति को ज्ञात करना, जीवन कौशल एवं शैक्षिक आकांक्षा के मध्य संबंध को स्पष्ट करना तथा शैक्षिक आकांक्षा पर जीवन कौशल के प्रभाव का परीक्षण करना था।

6.2 जनसंख्या एवं न्यादर्श

प्रस्तुत अध्ययन की जनसंख्या छत्तीसगढ़ राज्य के बलरामपुर जिले के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में कक्षा 11वीं में अध्ययनरत आदिवासी अर्थात् पहाड़ी कोरवा किशोरों एवं गैर-आदिवासी किशोरों से संबंधित रही। कुमारी (2025)

अध्ययन के लिए कुल 600 किशोरों को न्यादर्श के रूप में चयनित किया गया, जिनमें 300 पहाड़ी कोरवा आदिवासी किशोर तथा 300 गैर-आदिवासी किशोर सम्मिलित थे। लिंग के आधार पर भी न्यादर्श संतुलित रहा, जिसमें 300 बालक एवं 300 बालिकाएँ सम्मिलित थीं।

6.3 उपकरण

जीवन कौशल मापनी: किशोरों के जीवन कौशल का मापन करने के लिए जीवन कौशल मापनी का प्रयोग किया गया। इसमें आत्म-जागरूकता, सहानुभूति, निर्णय-क्षमता, समस्या-समाधान, संप्रेषण-कौशल, अंतर्वैयक्तिक संबंध, तनाव-प्रबंधन और संवेग-प्रबंधन जैसे आयाम सम्मिलित रहे। जायसवाल (2025)

शैक्षिक आकांक्षा मापनी: विद्यार्थियों की शैक्षिक आकांक्षा का मापन करने के लिए शैक्षिक आकांक्षा मापनी का प्रयोग किया गया। इसके माध्यम से विद्यार्थियों की उच्च शिक्षा, शैक्षिक लक्ष्य, शिक्षा के प्रति अभिरुचि और भविष्यगत शैक्षिक आकांक्षा का आकलन किया गया।

6.4 सांख्यिकीय प्रविधियाँ

आँकड़ों के विश्लेषण हेतु मध्यमान, मानक विचलन, स्वतंत्र नमूना t-परीक्षण, कार्ल पियर्सन सहसंबंध गुणांक एवं सरल रैखिक प्रतिगमन विश्लेषण का प्रयोग किया गया। सभी शून्य परिकल्पनाओं का परीक्षण 0.05 सार्थकता स्तर पर किया गया।

7. आँकड़ों का विश्लेषण एवं व्याख्या

7.1 उद्देश्य 1: आदिवासी एवं गैर-आदिवासी किशोरों की शैक्षिक आकांक्षाओं के मध्य अंतर

प्रथम उद्देश्य के अंतर्गत आदिवासी एवं गैर-आदिवासी किशोरों की शैक्षिक आकांक्षाओं के मध्य अंतर का अध्ययन किया गया। इसके लिए 300 आदिवासी किशोरों और 300 गैर-आदिवासी किशोरों के शैक्षिक आकांक्षा प्राप्तांकों की तुलना स्वतंत्र नमूना t-परीक्षण द्वारा की गई। परिणाम तालिका 1 में प्रस्तुत हैं।

तालिका 1 आदिवासी एवं गैर-आदिवासी किशोरों की शैक्षिक आकांक्षा प्राप्तांकों का तुलनात्मक विश्लेषण

समूह	N	मध्यमान (M)	मानक विचलन (SD)	df	t-मान	सार्थकता
आदिवासी किशोर	300	24.68	6.42	598	6.73**	$p < .01$
गैर-आदिवासी किशोर	300	28.14	6.18			

** $p < .01$ स्तर पर सार्थक।

तालिका 1 से स्पष्ट है कि आदिवासी किशोरों की शैक्षिक आकांक्षा का मध्यमान 24.68 तथा मानक विचलन 6.42 प्राप्त हुआ, जबकि गैर-आदिवासी किशोरों की शैक्षिक आकांक्षा का मध्यमान 28.14 तथा मानक विचलन 6.18 प्राप्त हुआ। दोनों समूहों के मध्यमान में 3.46 अंकों का अंतर पाया गया।

प्राप्त t-मान 6.73 है, जो .01 सार्थकता स्तर पर सार्थक है। अतः शून्य परिकल्पना H_01 अस्वीकृत की जाती है। इससे स्पष्ट होता है कि आदिवासी एवं गैर-आदिवासी किशोरों की शैक्षिक आकांक्षाओं में सार्थक अंतर है। गैर-आदिवासी किशोरों की शैक्षिक आकांक्षा आदिवासी किशोरों की तुलना में अधिक पाई गई।

यह अंतर उच्च शिक्षा संबंधी जागरूकता, पारिवारिक शैक्षिक पृष्ठभूमि, विद्यालयी मार्गदर्शन, संसाधनों की उपलब्धता और शैक्षिक अवसरों की जानकारी से संबंधित हो सकता है। पहाड़ी कोरवा आदिवासी किशोरों में शैक्षिक आकांक्षा अपेक्षाकृत कम पाई जाना इस बात की ओर संकेत करता है कि इस समूह को उच्च शिक्षा संबंधी मार्गदर्शन, प्रेरणा और जीवन-कौशल आधारित शैक्षिक सहायता की विशेष आवश्यकता है।

7.2 उद्देश्य 2: जीवन कौशल एवं शैक्षिक आकांक्षा के मध्य संबंध

द्वितीय उद्देश्य के अंतर्गत जीवन कौशल एवं शैक्षिक आकांक्षा के मध्य संबंध का अध्ययन किया गया। इसके लिए समग्र न्यादर्श, आदिवासी किशोरों तथा गैर-आदिवासी किशोरों के लिए पृथक-पृथक पियर्सन सहसंबंध गुणांक ज्ञात किया गया। परिणाम तालिका 2 में प्रस्तुत हैं।

तालिका 2

Anusandhanvallari
Vol 2025, No.1
February 2025
ISSN 2229-3388

जीवन कौशल एवं शैक्षिक आकांक्षा के मध्य सहसंबंध

समूह	**N**	**सहसंबंध गुणांक**	**सार्थकता**
सम्पूर्ण न्यादर्श	600	0.52	$p < .01$
आदिवासी किशोर	300	0.46	$p < .01$
गैर-आदिवासी किशोर	300	0.49	$p < .01$

** $p < .01$ स्तर पर सार्थक।

तालिका 2 से स्पष्ट है कि सम्पूर्ण न्यादर्श में जीवन कौशल एवं शैक्षिक आकांक्षा के मध्य सहसंबंध गुणांक 0.52 प्राप्त हुआ, जो धनात्मक एवं सार्थक है। इसका अर्थ है कि जीवन कौशल के स्तर में वृद्धि के साथ शैक्षिक आकांक्षा में भी वृद्धि की प्रवृत्ति पाई गई।

आदिवासी किशोरों में जीवन कौशल एवं शैक्षिक आकांक्षा के मध्य सहसंबंध 0.46 प्राप्त हुआ, जबकि गैर-आदिवासी किशोरों में यह सहसंबंध 0.49 पाया गया। दोनों समूहों में संबंध धनात्मक एवं सार्थक है। इससे स्पष्ट होता है कि जीवन कौशल शैक्षिक आकांक्षा से सकारात्मक रूप से जुड़ा हुआ है।

अतः शून्य परिकल्पना H_o2 अस्वीकृत की जाती है। यह निष्कर्ष दर्शाता है कि जिन किशोरों में आत्म-जागरूकता, निर्णय-क्षमता, समस्या-समाधान, संप्रेषण-कौशल, तनाव-प्रबंधन और आत्मविश्वास जैसे जीवन कौशल अधिक विकसित होते हैं, वे उच्च शिक्षा और शैक्षिक प्रगति के प्रति अधिक जागरूक एवं प्रेरित होते हैं।

7.3 उद्देश्य 3: शैक्षिक आकांक्षा पर जीवन कौशल का प्रभाव

तृतीय उद्देश्य के अंतर्गत शैक्षिक आकांक्षा पर जीवन कौशल के प्रभाव का अध्ययन किया गया। इसके लिए सरल रैखिक प्रतिगमन विश्लेषण का प्रयोग किया गया, जिसमें जीवन कौशल को स्वतंत्र चर तथा शैक्षिक आकांक्षा को आश्रित चर के रूप में लिया गया। परिणाम तालिका 3 में प्रस्तुत हैं।

तालिका 3 शैक्षिक आकांक्षा पर जीवन कौशल का सरल रैखिक प्रतिगमन विश्लेषण

स्वतंत्र चर	**आश्रित चर**	**N**	**R**	**R^2**	**समायोजित R^2**	**F-मान**	**सार्थकता**
जीवन कौशल	शैक्षिक आकांक्षा	600	0.52	0.270	0.269	221.54**	$p < .01$

** $p < .01$ स्तर पर सार्थक।

तालिका 3 से स्पष्ट है कि जीवन कौशल एवं शैक्षिक आकांक्षा के मध्य सहसंबंध = 0.52 प्राप्त हुआ। निर्धारण गुणांक $R^2 = 0.270$ है, जिससे स्पष्ट होता है कि जीवन कौशल किशोरों की शैक्षिक आकांक्षा में लगभग 27.0% प्रसरण की व्याख्या करता है। समायोजित $R^2 = 0.269$ प्राप्त हुआ, जो यह दर्शाता है कि प्रतिदर्श के आकार को ध्यान में रखने के बाद भी जीवन कौशल का शैक्षिक आकांक्षा पर प्रभाव सार्थक बना रहा।

F-मान 221.54 प्राप्त हुआ, जो .01 स्तर पर सार्थक है। अतः शून्य परिकल्पना H_o3 अस्वीकृत की जाती है। इससे स्पष्ट होता है कि जीवन कौशल किशोरों की शैक्षिक आकांक्षा का सार्थक पूर्वानुमानकारी चर है।

यह निष्कर्ष बताता है कि जीवन कौशल में वृद्धि होने पर किशोरों की शैक्षिक आकांक्षा भी सुदृढ़ होती है। आत्म-जागरूकता विद्यार्थी को अपनी क्षमताओं को समझने में सहायता करती है, निर्णय-क्षमता उसे शैक्षिक विकल्पों के चयन में सक्षम बनाती है, समस्या-समाधान कौशल उसे बाधाओं से निपटने की शक्ति देता है, और आत्मविश्वास उसे उच्च शिक्षा की दिशा में आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करता है।

8. प्रमुख निष्कर्ष

1. आदिवासी एवं गैर-आदिवासी किशोरों की शैक्षिक आकांक्षाओं के मध्य सार्थक अंतर पाया गया।

2. गैर-आदिवासी किशोरों की शैक्षिक आकांक्षा आदिवासी किशोरों की तुलना में अधिक पाई गई।

3. जीवन कौशल एवं शैक्षिक आकांक्षा के मध्य धनात्मक एवं सार्थक सहसंबंध पाया गया।

4. सम्पूर्ण न्यादर्श में जीवन कौशल एवं शैक्षिक आकांक्षा के मध्य सहसंबंध = 0.52 प्राप्त हुआ, जो .01 स्तर पर सार्थक है।

5. आदिवासी किशोरों में जीवन कौशल एवं शैक्षिक आकांक्षा के मध्य सहसंबंध = 0.46 तथा गैर-आदिवासी किशोरों में सहसंबंध = 0.49 प्राप्त हुआ।

6. प्रतिगमन विश्लेषण से स्पष्ट हुआ कि जीवन कौशल शैक्षिक आकांक्षा में लगभग 27.0% प्रसरण की व्याख्या करता है।

7. जीवन कौशल किशोरों की शैक्षिक आकांक्षा का एक महत्वपूर्ण एवं सार्थक पूर्वानुमानकारी चर सिद्ध हुआ।

8. पहाड़ी कोरवा आदिवासी किशोरों में शैक्षिक आकांक्षा को सुदृढ़ करने के लिए जीवन-कौशल आधारित शैक्षिक हस्तक्षेप आवश्यक हैं।

9. परिचर्चा

प्रस्तुत अध्ययन के निष्कर्षों से स्पष्ट होता है कि जीवन कौशल और शैक्षिक आकांक्षा के मध्य सार्थक धनात्मक संबंध है। यह परिणाम इस विचार को पुष्ट करता है कि शिक्षा के प्रति उच्च आकांक्षा केवल बाह्य अवसरों पर निर्भर नहीं करती, बल्कि विद्यार्थी की आंतरिक मनो-सामाजिक क्षमताओं से भी प्रभावित होती है। जिन किशोरों में आत्म-जागरूकता, आत्मविश्वास, निर्णय-क्षमता, समस्या-समाधान और तनाव-प्रबंधन जैसे कौशल विकसित होते हैं, वे शिक्षा को अपने भविष्य-निर्माण का साधन मानते हैं और उच्च शिक्षा की दिशा में अधिक प्रेरित होते हैं।

आदिवासी एवं गैर-आदिवासी किशोरों की शैक्षिक आकांक्षाओं में पाया गया अंतर सामाजिक एवं शैक्षिक असमानताओं की ओर संकेत करता है। गैर-आदिवासी किशोरों का शैक्षिक आकांक्षा स्तर अधिक होना इस बात को दर्शाता है कि उन्हें उच्च शिक्षा, पारिवारिक प्रोत्साहन, विद्यालयी मार्गदर्शन और शैक्षिक अवसरों की जानकारी अपेक्षाकृत अधिक प्राप्त हो सकती है। इसके विपरीत पहाड़ी कोरवा किशोरों की शैक्षिक आकांक्षा अपेक्षाकृत कम होना सीमित संसाधनों, भौगोलिक दूरी, पारिवारिक शैक्षिक पृष्ठभूमि की कमी और उच्च शिक्षा संबंधी जानकारी के अभाव से प्रभावित हो सकता है।

प्रतिगमन विश्लेषण से यह स्पष्ट हुआ कि जीवन कौशल शैक्षिक आकांक्षा को सार्थक रूप से प्रभावित करता है। इसका अर्थ है कि यदि विद्यार्थियों में जीवन कौशलों का विकास किया जाए, तो उनकी शैक्षिक आकांक्षाओं को सुदृढ़ किया जा सकता है। विशेष रूप से पहाड़ी कोरवा जैसे विशेष रूप से कमजोर जनजातीय समूहों के किशोरों के लिए जीवन-कौशल शिक्षा, शैक्षिक परामर्श और लक्ष्य-निर्धारण कार्यक्रम अत्यंत उपयोगी सिद्ध हो सकते हैं।

10. शैक्षिक निहितार्थ

1. जनजातीय क्षेत्रों के विद्यालयों में जीवन-कौशल शिक्षा को नियमित शैक्षिक गतिविधियों का भाग बनाया जाना चाहिए।

2. पहाड़ी कोरवा किशोरों के लिए उच्च शिक्षा संबंधी मार्गदर्शन, छात्रवृत्ति जानकारी और प्रवेश प्रक्रिया से संबंधित जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किए जाने चाहिए।

3. विद्यालयों में जीवन-कौशल आधारित लक्ष्य-निर्धारण, समस्या-समाधान, आत्मविश्वास-विकास और निर्णय-क्षमता प्रशिक्षण कार्यक्रम चलाए जाने चाहिए।

4. आदिवासी विद्यार्थियों की शैक्षिक आकांक्षा बढ़ाने के लिए स्थानीय भाषा और सांस्कृतिक संदर्भों में शैक्षिक परामर्श उपलब्ध कराया जाना चाहिए।

5. शिक्षकों को जीवन-कौशल आधारित शिक्षण, परामर्श और जनजातीय विद्यार्थियों के संवेदनशील मार्गदर्शन हेतु प्रशिक्षित किया जाना चाहिए।

6. अभिभावकों को भी बच्चों की शिक्षा और उच्च शिक्षा के अवसरों के प्रति जागरूक करना आवश्यक है।

7. आवासीय विद्यालयों, आश्रम विद्यालयों और जनजातीय छात्रावासों में जीवन-कौशल एवं शैक्षिक आकांक्षा विकास कार्यक्रम संचालित किए जाने चाहिए।

11. अध्ययन की सीमाएँ एवं भावी शोध

प्रस्तुत अध्ययन छत्तीसगढ़ राज्य के बलरामपुर जिले तक सीमित रहा तथा इसमें कक्षा 11वीं में अध्ययनरत पहाड़ी कोरवा आदिवासी एवं गैर-आदिवासी किशोरों को सम्मिलित किया गया। अतः इसके निष्कर्षों का सामान्यीकरण अन्य जिलों, अन्य कक्षाओं अथवा अन्य जनजातीय समूहों पर सावधानीपूर्वक किया जाना चाहिए।

भविष्य में इसी प्रकार का अध्ययन छत्तीसगढ़ के अन्य जनजातीय बहुल जिलों, जैसे जशपुर, सरगुजा, कोरबा, रायगढ़ और बस्तर क्षेत्र में किया जा सकता है। साथ ही अन्य विशेष रूप से कमजोर जनजातीय समूहों पर भी जीवन कौशल और शैक्षिक आकांक्षा के संबंध का अध्ययन किया जा सकता है।

भविष्य में गुणात्मक अध्ययन, जैसे साक्षात्कार, फोकस समूह चर्चा और केस अध्ययन के माध्यम से यह समझा जा सकता है कि आदिवासी किशोरों की शैक्षिक आकांक्षाओं को प्रभावित करने वाले वास्तविक सामाजिक, पारिवारिक और सांस्कृतिक कारक कौन-कौन से हैं। इसके अतिरिक्त जीवन-कौशल प्रशिक्षण के पूर्व एवं पश्चात शैक्षिक आकांक्षा में होने वाले परिवर्तन का अध्ययन करने के लिए प्रायोगिक अथवा अर्ध-प्रायोगिक शोध भी किया जा सकता है।

12. उपसंहार

प्रस्तुत अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि जीवन कौशल किशोरों की शैक्षिक आकांक्षा को प्रभावित करने वाला एक महत्वपूर्ण मनो-सामाजिक कारक है। आदिवासी एवं गैर-आदिवासी किशोरों की शैक्षिक आकांक्षाओं में सार्थक अंतर पाया गया तथा गैर-आदिवासी किशोरों की शैक्षिक आकांक्षा अपेक्षाकृत अधिक रही।

जीवन कौशल एवं शैक्षिक आकांक्षा के मध्य धनात्मक एवं सार्थक संबंध यह संकेत करता है कि जिन किशोरों में जीवन कौशल अधिक विकसित होते हैं, वे उच्च शिक्षा, शैक्षिक लक्ष्य और भविष्यगत प्रगति के प्रति अधिक जागरूक एवं प्रेरित होते हैं। प्रतिगमन विश्लेषण से भी यह स्पष्ट हुआ कि जीवन कौशल शैक्षिक आकांक्षा का महत्वपूर्ण पूर्वानुमानकारी चर है।

अतः पहाड़ी कोरवा आदिवासी किशोरों की शैक्षिक आकांक्षाओं को सुदृढ़ करने के लिए जीवन-कौशल शिक्षा, शैक्षिक परामर्श, लक्ष्य-निर्धारण, आत्मविश्वास-विकास और उच्च शिक्षा संबंधी जागरूकता कार्यक्रमों की विशेष आवश्यकता है। यदि विद्यालय, शिक्षक, अभिभावक और नीति-

निर्माता मिलकर जीवन-कौशल आधारित शैक्षिक हस्तक्षेप विकसित करें, तो जनजातीय किशोरों की शैक्षिक आकांक्षाओं को अधिक सशक्त, यथार्थपरक और भविष्य उन्मुख बनाया जा सकता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

[1] Best, J. W., & Kahn, J. V. (2016). Research in education (10th ed.). PHI Learning.

[2] Durlak, J. A., Weissberg, R. P., Dymnicki, A. B., Taylor, R. D., & Schellinger, K. B. (2011). The impact of enhancing students' social and emotional learning: A meta-analysis of school-based universal interventions. Child Development, 82(1), 405–432.

[3] Eccles, J. S., & Wigfield, A. (2002). Motivational beliefs, values, and goals. Annual Review of Psychology, 53, 109–132.

[4] Sharma, P. K., & Kumari, S. (2024). A Study of B.Ed. Trainees' Attitudes Toward the Use of Digital Devices. International Journal of Research -Granthaalayah, 12(8), 186–192. https://doi.org/10.29121/granthaalayah.v12.i8.2024.6409

[5] Jayswal, B. K. (2025). A Comparative Study of the Colonial Decline of the Indian Textile Industry and its Revival Under the Swadeshi Movement. International Journal of Research -Granthaalayah, 13(10), 128–142. https://doi.org/10.29121/granthaalayah.v13.i10.2025.6445

[6] Kumari, K. (2025). A Comparative Study of Gandhi's Collaboration and Resistance in the First and Second World Wars. International Journal of Research -Granthaalayah, 13(10), 143–153. https://doi.org/10.29121/granthaalayah.v13.i10.2025.6446

[7] World Health Organization. (1997). Life skills education for children and adolescents in schools. WHO, Division of Mental Health.

[8] कुमार, आर., एवं फोगाट, एस. (2018). माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की शैक्षिक आकांक्षा का सामाजिक-आर्थिक स्थिति के संदर्भ में अध्ययन। भारतीय शिक्षा शोध पत्रिका, 28(2), 45–52।

[9] भट्ट, आर., शर्मा, पी., एवं कौल, एस. (2018). विद्यालयी वातावरण एवं अभिभावकीय प्रोत्साहन का विद्यार्थियों की शैक्षिक आकांक्षा पर प्रभाव। शैक्षिक अनुसंधान समीक्षा, 12(1), 67–76।

[10] मिश्रा, ए., सिंह, पी., एवं कुमार, डी. (2024). आदिवासी विद्यार्थियों की शैक्षिक आकांक्षा एवं शैक्षणिक उपलब्धि का अध्ययन। भारतीय जनजातीय शिक्षा पत्रिका, 9(1), 21–34।